प्रारम्भिक संबोधन

माननीय सदस्यगण,

पंचदश बिहार विधान सभा के चतुर्थ सत्र के शुभारम्भ के अवसर पर मैं आप सबों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ ।

वर्त्तमान सत्र के दौरान पाँच बैठकें होंगी, जिनमें राजकीय विधेयक, गैर सरकारी संकल्प तथा वित्तीय वर्ष 2011-12 के द्वितीय अनुपूरक व्यय विवरणी के उपस्थापन का कार्यक्रम प्रस्तावित है ।

लोकतंत्र में संसदीय प्रणाली की सफलता जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर निर्भर करती है । हमारे लोकतंत्र का सर्वाधिक दायित्व आवश्यक सामाजिक परिवर्त्तन से ही पूरी हो सकती है, जिसके लिए न्याय के साथ विकास आवश्यक है और इसकी प्राप्ति के लिए जनप्रतिनिधियों को संकल्पशील प्रयत्न करना होगा । संसदीय लोकतंत्र में आम जनता को अपने जनप्रतिनिधियों से काफी आशाऐं एवं आकांक्षाऐं हैं, जिसे पूरा करना हमारा सामाजिक एवं नैतिक कर्त्तव्य है । आपके प्रयास का ही प्रतिफल है कि बिहार के विकास की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित हुआ है । संसदीय प्रणाली के तहत मर्यादा का पालन करते हुए आप सभी सदन के अन्दर प्रश्नकाल, ध्यानाकर्षण एवं अन्य अवसरों का पूरा सदुपयोग कर सकते हैं और अपनी विधायी क्षमता को बढ़ा सकते हैं ।

लोकतांत्रिक संसदीय प्रणाली में आपकी कितनी गहरी आस्था है, यह दिनांक 26 एवं 27 सितम्बर, 2011 को प्रबोधन कार्यक्रम तथा दिनांक 15 नवम्बर, 2011 को आपके बीच 'डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम शिक्षक की भूमिका में' नामक बिहार विधान सभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम

Contd.....2..

में आप सबों की सक्रिय उपस्थिति से सिद्ध हो गयी है । आपने जिस अभिरूचि एवं लगन से संसदीय प्रणाली के लब्ध-प्रतिष्ठित विद्वानों को सुना और विधायी प्रक्रिया एवं जनसमस्याओं के निदान हेतु प्रश्न पूछे, वह परिलक्षित करता है कि बिहार वैशाली के पुराने गणतांत्रिक गौरव को अक्षुण्ण रखेगा और हम सब मिलकर एक ऐसे विकसित बिहार को बना सकेंगे, जो दुनिया के लिए एक उदाहरण होगा ।

पूर्व की भाँति सदन में प्रश्नोत्तरकाल का आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं विभिन्न स्थानीय चैनलों से सीधा एवं डेफर्ड प्रसारण कराने की व्यवस्था की गई है, जिससे सदन में आपकी गतिविधियों से बिहार का आम अवाम सीधे रू-ब-रू हो सके ।

आशा और विश्वास है कि सदन के संचालन में आप सभी का भरपूर साकारात्मक सहयोग प्राप्त होगा ।

❄❄❄❄❄